ISSN 2231-1629 Knowledge Resonance
A Half Yearly National Peer-Reviewed & Indexing with SJIF Impact Factor Research Journal
IMPACT FACTOR 8.072

स्वच्छता एवं पर्यावरणीय समस्याओं में लोककला तथा नाटकों का योगदान

डॉ.संदीप अ.बनसोडे**
शोधनिर्देशक
प्राध्यापक, मराठी विभाग
र. भ. अट्टल महाविद्यालय,गेवराई
जि.बीड

देवरे रामेश्वर गिरधर*
शोध छात्र
नाट्यशास्त्र विभाग
डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय
औरंगाबाद

मुख्य शब्द
पर्यावरण, परिवर्तन, स्वच्छता, संस्कृति, लोककला, जन-जागरण, एकांकी, प्रदूषण, नाटक, औद्योगिकीकरण, बोलीभाषा, G-20-W- 20, इंसानियत, सुंदर, समाज, जीव, स्मार्ट, भविष्य, वृक्षतोड़, रंगदृष्टि ।

समाज व्यवस्था में सामाजिक प्रबोधन और परिवर्तन करने में नाटक यह दृक-श्राव्य माध्यम अधिक असरदार सिद्ध हुआ है। वैदिक काल में चार वेदों से ऋग्वेद से 'पाठ्य', सामवेद से 'गीत', यजुर्वेद से 'अभिनय' और अथर्ववेद से 'रस' का संग्रह करके 'पंचमवेद' यानी "नाट्यवेद" का निर्माण किया है। तभी से नाटकों द्वारा लोक मनोरंजन के साथ-साथ समाज में उत्पन्न समस्याओं को प्रश्नांकित करने का बहुमूल्य कार्य किया है। इसी अर्थ में नाटक को समाज का आईना कहा जाता है।

इस सृष्टि में पृथ्वी पर सभी जीवों को जीवित रहने के लिए निर्मित धरती, हवा, पानी, वृक्ष जंगल, पशुपक्षी, धूप आदि हमारे आसपास के भौगोलिक वातावरण को पर्यावरण कहा जाता है। समस्त जीव तथा निर्जीव सृष्टि को बनाए रखने में पर्यावरण ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यावरण में शामिल सबसे बुद्धिमान प्राणी मनुष्य को कहा जाता है।यहीं मनुष्य अपनी अपेक्षा, हुशारी, घमेंड और लालच में अपने स्वार्थ के लिए आए दिन पर्यावरणीय समस्या खड़ा करने में जिम्मेदार दिखाई देता है। इंसान के इसी बढ़ते अतिरेक से भविष्य में पर्यावरणीय समस्या का खतरा अधिक बढ़ते जा रहा है। जिस तरह दिन पे दिन आबादी बढ़ रही है। उसी के साथ बढ़ते शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, विज्ञान की अधिक गति से प्रदूषण बढ़ रहा है। जिसमें ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, जल प्रदूषण आदि शामिल है। प्रदूषण की इस बढ़ती रफ्तार से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। जो आने वाले भविष्य में सभी जीव सृष्टि के लिए घातक है। लोगों ने लोक मनोरंजन हेतु संस्कृति, आचार- विचार, रूढ़ी, परंपरा से पूर्ण गीत, संगीत, नृत्य, नाट्य के संयुक्त एकल अथवा समूह कला के प्रदर्शन को लोककला कहा जाता है। इन कलाओं का प्रदर्शन लोगों की बोलीभाषा में किया जाता है, जिसका प्रत्यक्ष सहजता से दर्शकों के दिल और दिमाग पर परिणाम होता है। बोलीभाषा में अपनापन होने की वजह से दर्शक इस कला में प्रस्तुत रहन-सहन, नव विचार, नव कल्पना, सामाजिक समस्याओं पर उपाय योजना के साथ साथ सरकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार करने के लिए लोककला महत्वपूर्ण साबित होती है। भारत देश के राज्यों में अलग-अलग अनेक लोककलाएं शामिल है।जैसे नाचा, तमाशा, नौटंकी, पंडवानी, माच, भवई, ख्याल, भांड, बिहू, लावणी, छाऊ, कीर्तन, यक्षगान, भारुड, पोवाडा आदि शामिल है। इन कलाओं का आयोजन सन, उत्सव, त्योहारों, शादी, यात्रा आदि में किया जाता है।

आधुनिक भारतीय रंगभूमि पर नाट्यनिर्देशक हबीब तनवीर का अमूल्य योगदान है। उन्होंने भारतीय रंगमंच पर नई नाट्यशैली को जन्म दिया है। नाटकों में लोक परंपराओं का इस्तेमाल करके उनका प्रचार-प्रसार करके भारतीय लोककला को विश्व उजागर करने का बड़ा योगदान दिया है। उनके निर्देशित नाटकों में चरणदास चोर, आगरा बाजार, बहादुर कलारिन, मिट्टी की गाड़ी, सोन सागर, हिरमा की अमर कहानी, गांव के नाम ससुराल मोर नाव दामाद, पोंगा पंडित, देख रहे हैं नैन, एक औरत हिपेशिया भी थी, जिसने लाहौर नहीं देखा वह जन्मा ही नहीं जैसे एक से बढ़कर एक दो अंकी नाटक और कारतूस, परंपरा, दूध का गिलास, आग की गेंद, चांदी का चमचा जैसे बाल नाटकों द्वारा पर्यावरण, स्वच्छता, राजनीतिक शोषण,बाजारवाद, सांस्कृतिकवाद, सामंतवाद, नैतिक-अनैतिकवाद, वर्ग-विभेद, समाज व्यवस्था में उत्पन्न कुरीतियों पर नाटकों में लोककला शामिल करके प्रहार किया है।

चांदी का चमचा इस बाल नाटक में नाट्य निर्देशक हबीब तनवीर ने स्वच्छता के महत्व पर जोरदार भाष्य करने का प्रयास किया है। बच्चों का यह नाटक बड़ी मजेदार तरीके से शुरू होता है। जिसमें बॉम्बे जैसी बड़ी शहरों में ऊंची इमारत के नीचे दुकानदार दुकान लगाकर बैठता है। जिस पर ऊंची इमारत की खिड़की से एक पड़ोसीन हर दिन दुकानपर कूड़ा कचरा फेंकती है। उसकी इस आदत से दुकानदार परेशान है। दुकानदार अपनी इस परेशानी को व्यक्त करते अपने मित्र और लोगों से कहता है कि-

दुकानदार:- मेरे साथ दिन भर जो होता रहता है, दुनिया में किसी के साथ ना होता होगा। कभी नाशपाती के छिलके आकाश से बरस रहे हैं, कभी झूठ उनकी वर्षा हो रही है। ऊपर का सारा कचरा दुकान के अंदर चला आ रहा है। इस शरारत पता लगाने के लिए दुकानदार पड़ोसीन से बात करता है तो वह इस बात का बतंगड़ बना कर उल्टा दुकानदार को ही ताने मार कर चली जाती है। इस समस्या को सुलझाने के लिए दुकानदार का मित्र अपनी दिमागी चाल चलाकर खिड़की की और आवाज लगाता है

मित्र:- अच्छा देखिए यह चांदी का चमचा किसका है? अरे भाई कचरे के अंदर यह चांदी का चमचा किसने फेंक दिया? बोलते क्यों नहीं, किसका है यह चांदी का चमचा? बोलते हो या हम ले जाए?

आवाज सुनते तुरंत खिड़की से झांककर, चोर उल्टा कोतवाल को डांटे इस कहावत को सिद्ध करते हुए, वहीं ताने मारने वाली पड़ोसीन कहती हैं-

पड़ोसीन:- क्षमा कीजिएगा । नौकरानी से भूल हो गई उसने कूड़े के साथ फेंक दिया चमचा।

पड़ोसीन अपना गुनाह कबूल करते ही दुकानदार का मित्र और अन्य लोग उसे कहते है –

मित्र:- चमचा तो नहीं फेंका, हां केले के छिलके और अपने घर का सारा कूड़ा आपने भूल से इनके सिर पर जरूर फेंक दिया है। बस यह उठाकर ले जाइए। (पड़ोसीन झिझकती है) चलिए उठाइए।

एक आदमी:- आप ही का तो है।

दूसरा:- कूड़ा फेंका है तो सब अब उठाइए।

सब:- उठाइए चलिए सारा उठाइए। मोहल्ले भर में अपने घर की गंदगी फैलाना, यह कहा की रीत है। यह भी कोई सफाई है! अपना घर साफ किया दूसरे का गंदा कर दिया है। चलिए उठाइए कूड़ा ।...(पड़ोसीन कूड़ा उठाती हैं)

मित्र:- और वायदा कीजिए कि अब कभी ऐसा न करेंगी।

पड़ोसीन:- क्षमा कीजिए। कान पकड़े, अब कभी कूड़ा नीचे नहीं फेकुंगी।

मित्र:- घर का कूड़ा यों सड़क पर नहीं फेंक देते। नीचे लोग रहते है। सड़क पर आते जाते हैं आपकी तो सफाई हुई लेकिन सारे मोहल्ले की गंदगी। कूड़े के लिए टीन बना है, वहां पर फिंकवा दिया कीजिए।

अपने मित्र के इस तरकीब को देखते हुए दुकानदार खुश हो जाता है। जिससे उसकी परेशानी हमेशा के लिए हल हो जाती है। इस नाटक के माध्यम से नाट्य निर्देशक हबीब तनवीर ने सृजनशील रंगदृष्टि से दर्शकों को स्वच्छता के महत्व का एहसास दिलाया है। ताकि जैसे हम हमारा घर स्वच्छ करते हैं वैसे ही गलियां और मोहल्ले को अगर हम स्वच्छ रखेंगे तो अपने आप हमारा देश स्वच्छ, सुंदर और निरोगी बनेगा। स्वच्छता के बारे में महात्मा गांधी कहते हैं-

यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है, तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता।

बेहतर साफ-सफाई से ही भारत के गांवों को आदर्श बनाया जा सकता है।

जीवनभर स्वच्छता के महत्व को जनमानस में रूबरू कराने वाले स्वच्छता अभियान के जनक, समाज सुधारक संत गाडगे बाबा **(1876-1956)** खुद गांवों गांवों में घूमकर हाथ में झाड़ू लेकर कूड़ा कचरा साफ करते थे और अपने कीर्तनो से लोगों को अस्वच्छता से होने वाले दुष्परिणाम के बारे में ज्ञान देते थे।उनके इसे कार्य को मध्यनजर रखते हुए महाराष्ट्र राज्य सरकार ने **2000-01** में स्वच्छ भारत मिशन हेतु "संत गाडगे बाबा ग्राम स्वच्छता अभियान" इस उपक्रम की शुरुआत की गई।के तहत महाराष्ट्र राज्य में स्वच्छ, सुंदर गांव को यह पुरस्कार दिया जाता है। **23** फरवरी **1876** में जन्मे संत गाडगे बाबा कि आज **23** फरवरी **2023** में **147** वी जयंती मनाई जा रही है।इस बार औरंगाबाद शहर (छत्रपती संभाजीनगर) में सब तरफ स्वच्छता, सुंदरता दिखाई दी। लेकिन इसका औचित्य था **G- 20 W-20** शिखर सम्मेलन भारत **2023**। **G- 20** शिखर सम्मेलन इस बार भारत देश में होने वाला है जिसकी तैयारी हेतु के संपूर्ण देश के साथ साथ सांस्कृतिक,ऐतिहासिक पहचान वाले औरंगाबाद शहर में संपूर्ण शहर भर का कूड़ा कचरा साफ करके, फुटपाथ, दिये, रोड के बाजू में हरियाली, पक्के रास्ते, बड़ी दीवारों पर रंग बिरंगी तस्वीरे, इतना ही नहीं जो पेड़, पौधे धूल मिट्टी से लथपथ भरे थे उन्हें पानी से धो भी लिया । शहर के

नागरिकों मैं स्वच्छता के प्रति जनजागृति करने के लिए के **11-12** फरवरी **2023** 'स्वच्छ औरंगाबाद अभियान' **G-20 W-20** अंतर्गत नुक्कड़ नाटकों का भी आयोजन किया गया था। जिसमें शोधछात्र ने भी सहभाग लिया था। नुक्कड़ नाटकों में लेखक-निर्देशक शेख असलम ने यह गीत लिखा था –

कचरा नको
घाण नको,
डोक्याला ताण नको
चला स्वच्छ करू भारत
स्वच्छ भारत सुंदर भारत...

इस नुक्कड़ नाटक के औरंगाबाद शहर में जगह-जगह, चौराहों पर प्रदर्शन किए गए जिससे मैं स्वच्छता, आरोग्य के प्रति लोगों में जनजागृति हो। प्रशासन के आयोजन, स्वच्छ और सुंदर औरंगाबाद शहर (छत्रपति संभाजीनगर) देखकर ऐसा लग रहा था कि संत गाडगेबाबा का जीवन कार्य सार्थक हुआ। फिर प्रश्न यह भी उठता था कि इस कार्य में आज तक लापरवाही क्यों की गई? क्या सिर्फ **G -20** शिखर सम्मेलन की मेहमान नवाजी के लिए यह सब दिखावा किया जा रहा है? क्या इसके बाद हमेशा के लिए निरंतर ऐसा ही स्मार्ट, स्वच्छ, सुंदर औरंगाबाद शहर (छत्रपति संभाजीनगर) दिखेगा? शहर में **G- 20 W-20** के अंतर्गत जोरों से हो रही स्वच्छता को देखते हुए डॉ. मोनाली देशमुख (संचालक- पंख फाउंडेशन) कहती है-

मागासलेपणाच्या मानसिकेतून बाहेर येण्याची गरज असून स्वच्छता, पाणी, विकास आणि रोजगार हा आपला हक्क आहे ही भावना जागृत होण्याची गरज आहे. त्यासाठी जी **20** हे निमित्त ठरले तरी पुरेसे आहे.

युनेस्कोचा नकाशावर विराजमान होण्याचा दुर्मिळ मान आपल्या शहराला मिळाला. मात्र शहराची मूलभूत स्वच्छता आणि प्राथमिक सुशोभीकरणासाठी जी **20** सारखे निमित्त शोधावे लागणे हे विचारात टाकणारे आहे. जाती-धर्माच्या खेळात नागरिकांना खेळवत ठेवून पाणी, रोजगार, रस्ते, विकास या मूलभूत सुविधांपासून शहराला वंचित ठेवण्यात आले आहे. हा खेळ थांबला पाहिजे. जी **20** आले तरच निधी मिळणार, स्वच्छता, रंग-रंगोटी होणार असे का? हे कायमस्वरूपी आले पाहिजे आणि टिकले पाहिजे. हे आणणे ही लोकप्रतिनिधींची जबाबदारी आहे, तर टिकवणे ही नागरिकांची. हा तात्पुरता दिखावा ठरू नये हीच अपेक्षा. डॉ. मोनाली देशमुख जी का यह मत सहारनीय है। निरोगी जनजीवन के लिए स्वच्छता के साथ-साथ पर्यावरण की देखभाल करना प्रशासन, लोकप्रतिनिधी तथा सब आम लोगों की जिम्मेदारी है। यह जिम्मेदारी गांव, शहर, राज्य की नहीं बल्कि संपूर्ण देश के हर एक नागरिक की है जो आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुखी, निरोगी और सुंदर बना सकती है। अपने नाटकों, एकांकी के माध्यम से दर्शकों के सामने वैश्विक पर्यावरणीय समस्या और सामाजिक मुद्दों को प्रस्तुत करने का प्रयास युवा नाट्य निर्देशक रावबा गजमल ने किया है। उनके एकांकी में भक्षक, मांणस, मादी जैसे बेहतरीन रंगमंचीय प्रस्तुतीकरण शामिल है।

'भक्षक' एकांकी द्वारा विकास के नाम पर बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण हेतु जंगलों पर होने वाले अतिक्रमण, वृक्षतोड़ की वजह से जंगली हिंस्त्र प्राणी मानव बस्ती में घुसते हैं, और खुद की जान बचाने में वन्य प्राणी और इंसान के बीच संघर्ष होता दिखता है। इस गंभीर पर्यावरणीय समस्या को लेखक-निर्देशक रावबा गजमल की सृजनशील रंगसोच और कलाकारों के अभिनय के साथ-साथ संगीत, प्रकाश के संयुक्त माध्यम से काफी प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण देखने मिलता है। 'मांणस' एकांकी में वृक्षों की कत्तल होने के बाद बंदरों के घर उधवस्त हो जाते हैं,जो अपने घर की तलाश में धूप में भटकते रहते हैं, अपने स्वार्थ के लिए पर्यावरण का सर्वनाश करने वाला इंसान इंसानियत भी भूलता जा रहा है,वह जंगल के मासूम प्राणियों की शिकार कर रहा है। मासूम हिरण को संकट में देखकर सभी बंदर मिलकर शिकारी को मारके भगाते हैं। और हिरण की जान बचाते है। इस एकांकी की खासियत है कि सभी कलाकार रंगमंच पर संपूर्ण प्रस्तुति में अपने हाथ और घुटनों पर अभिनय करते हैं। खुद को बुद्धिमान समझने वाला इंसान किस लालच में आकर अपनी इंसानियत भूलता जा रहा है, और वही इंसानियत प्राणियों में देखने को मिलती है जो हमेशा पर्यावरण पर निर्भर है और उसकी रक्षा भी कर रहे हैं। रंगमंच पर प्रस्तुत गूंगे जानवरों में इंसानियत को देखते हुए दर्शकों को अपनी इंसानियत और पर्यावरण बचाने के खातिर खुद की जिम्मेदारी का एहसास होता है। यही नाटक, एकांकी इस माध्यम की ताकत होती है,जो किसी को भी सबक सिखाने के लिए बिना हाथ उठाए किसी के भी मुंह पर तमाचा मार सकता है।

हर साल नुक्कड़ नाटक, एकांकी और नाट्य प्रतियोगिता में स्वच्छता एवं पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर जैसे भूमि, जल, वायु का प्रदूषण, कम वर्षा, भारी वर्षा, रसायनों

दुष्परिणाम, प्लास्टिक प्रदूषण, महामारी, स्वास्थ्य आदि वैश्विक चेतावनी और सामाजिक समस्याओं जैसे विषयों पर जन जागरण करने हेतु अनेकानेक मंचित नाटकों का योगदान जारी है और जारी रहेगा।

सारांश

दिन पे दिन बढ़ती पर्यावरण समस्या और अस्वच्छता बढ़ने के कारण खतरनाक बीमारियां, महामारी, का सामना पृथ्वी पर सभी जीवों को करना पड़ रहा है। जिसका प्रमाण बढ़ने से सृष्टि की हानि हो रही है। उसे रोकने की कोशिश में नाट्य आंदोलन जारी है।

संदर्भ

1. चांदी का चमचा, हबीब तनवीर, पंचरंगी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. रंग हबीब, भारतरत्न भार्गव, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली।
3. दैनिकपत्र, दिव्य मराठी, **21** फरवरी **2023**।
4. स्वच्छ भारत, नुक्कड़ नाटक, शेख असलम, **G-20 W- 20** औरंगाबाद स्वच्छ अभियान।
5. भक्षक, एकांकी, रावबा गजमल, लोकसत्ता लोकांकिका **2015-16**।
6. मांणस, एकांकी, रावबा गजमल, लोकसत्ता लोकांकिका **2017- 18**।